जोहान्सबर्ग
मई १ (श्रम दिवस), २००८

संदेश संख्या – १४३

धर्मप्रचारार्थ शृंखला पत्र : क्रियावान का उत्तर

यह संदेश दक्षिण अफ्रीका के एक क्रियावान द्वारा लिखा गया है और उसने इसे दक्षिण अफ्रीका में प्रचलित धर्मप्रचारार्थ शृंखला–पत्र पाने के बाद उत्तर के रूप में लिखा है । उस शृंखला–पत्र में पत्र पाने वाले से अनुरोध किया जाता है कि वह उस पत्र को दूसरों को भी भेजे । संक्षेप में, उन पत्रों में कई प्रसिद्ध हस्तियों के वैसे तथाकथित वक्तव्यों का जिक्र होता है, जिन्हें ईश–निन्दा या जीसस–निन्दा माना जाता है । और फिर यह बताया जाता है कि उन तथाकथित वक्तव्यों के बाद ही उनकी दुःखद एवं असामयिक मृत्यु हो गई । पत्र–पाठकों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे यह मान लें कि उन व्यक्तियों की मृत्यु ईश–निन्दा के कारण ही हुई । पत्र के अन्त में यह आह्वान होता है कि व्यक्ति (सम्भवतः गैर–ईसाई लोगों को प्रभावित करने के लिए) ईसा को एकमात्र उद्धारक के रूप में स्वीकार करें और उसकी घोषणा करे ।

प्रिय मित्र,

ईसा और ईश्वर के नाम पर भय का मानसिक प्रदूषण फैलाने के लिए आपको धन्यवाद । यदि मुझे अनुमति हो तो मैं आपको सलाह देना चाहूँगा कि आप कुछ दक्षिण अफ्रीकी देशों के गाँवों में जायें तथा जाँच करें । आपको कुछ ही दिनों में आसानी से ८००० ऐसे लोग मिल जायेंगे (जबकि आपके पत्र में लगभग पिछले ८० वर्षों की ८ घटनायें ही बतायी गई हैं) जिन्होंने कभी भी ईश–निन्दा या ईसा की निन्दा नहीं की फिर भी, गरीबी, बीमारी तथा अत्यन्त नारकीय परिस्थिति में रहने के कारण उनकी असामयिक मौत हुई । और यह सब मन (भय एवं लोभ जिसके मूल घटक हैं) द्वारा निर्मित सामाजिक व्यवस्था के कारण होता है जहाँ मनुष्य ही मनुष्य का शोषण करता है । मनुष्य एकमात्र ऐसी प्रजाति है जो ईश्वर और धर्म के नाम पर, राष्ट्रवाद तथा कई अन्य ''वाद'' के नाम पर अपनी ही प्रजाति के लाखों लोगों की हत्या करती है और शोषण करती है । फिर भी, ईसा उनकी रक्षा एवं उद्धार के लिए नहीं आते । आप ईश्वर और ईसा के प्रति अपनी आसक्ति से नाता नहीं तोड़ पाते क्योंकि आप अहंकार एवं स्वार्थ के प्रति अपने मोह से संबंध–विच्छेद नहीं कर सकते । इस आसक्ति एवं मोह को समाप्त करने वाली अन्तर्दृष्टि ही वास्तविक भगवत्ता है जो ईशा के शरीर में अभिव्यक्त हुई थी और वह सभी मनुष्यों में भी अभिव्यक्त हो सकती है । यही वह अन्तर्दृष्टि है जो उद्धार करती है । प्रज्ञा की यह जागृति ही रक्षा करती है । ईसा और ईश्वर के प्रति निर्भरता मनुष्य में भगवत्ता के उदय को रोकती है।

यदि आपके शरीर में स्थित जीवन और उसकी समझदारी, मन एवं इसकी मूर्खताओं से निर्मित परिस्थितियों के प्रति सजग हो जाये तो आप भी करुणा के आनन्द एवं समझदारी की ऊर्जा को उपलब्ध हो सकते हैं । धर्म के नाम पर पुरोहित वर्ग द्वारा दी जाने वाली आशाओं एवं धमकियों के कारण उत्पन्न दीनता तथा चित्तवृत्ति में उत्पन्न उत्तेजना एवं गड़बड़ी को उत्पन्न समझदारी की ऊर्जा समाप्त कर देती है और स्वस्थ बना सकती है । अपने भय का सामना करें और उससे मुक्त हो जायें । इसमें पुरोहितों की मदद लेना उन्हें भय, पूर्वाग्रहों, भ्रांतियों एवं विकृतियों के आधार पर दूसरों का शोषण करने के उनके व्यवसाय में मदद करना है ।

पुरस्कार और दण्ड, आशा और धमकी, लोभ और भय–ये सभी धर्म को माफिया बनाने में मदद करते हैं । किन्तु गहरी आध्यात्मिक समझदारी का उदय तब होता है जब अपनी अन्तर्चेतना के संबंध में खोज एवं जाँच से ज्ञान होता है कि अन्तर्चेतना में द्वैत मिथ्या है । अतः कृपया अपने लोभ और भय से भागें नहीं, बल्कि उसके प्रति जागें, उसका सामना करें । किसी भी प्रकार से, न उनके साथ संघर्ष करें और न ही उनका पोषण करें । ईसा को एक प्रतिशोधी या बदला लेने वाले व्यक्ति के रूप में बताना, जो घृणा का जवाब घृणा से देता है – वस्तुतः ईश–निन्दा ही है । ईश्वर के लिए, ईसा को अपने मानसिक–प्रदूषणों से दूर रखें। मृत लोगों के मुँह में अपनी बात डालकर उनका उपयोग ईसा या ईश्वर के नाम पर आतंक, डर एवं तबाही पैदा करने का घिनौना खेल कृपया बन्द करें ।

आपका मित्र !

।। जय ईसा ।।